International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(1): 21-23

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(1): 21-23
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 08-11-2020
Accepted: 16-12-2020

डॉ. रूपेश कुमार चौहान
असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत–विभाग, किरोड़ीमल महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
डॉ. रूपेश कुमार चौहान
असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत–विभाग, किरोड़ीमल महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

षडाम्नाय तन्त्र : एक रहस्यात्मक तंत्र ग्रंथ

डॉ. रूपेश कुमार चौहान

प्रस्तावना

पुराण और तंत्र साहित्य को सर्वदा कपोल–कल्पित और अवैज्ञानिक ही माना जाता रहा है। जबकि ऐसा नहीं है क्योंकि ये दोनों विषय अपने आप में पूर्णतः वैज्ञानिक हैं। यदि वैज्ञानिक इन पर शोध करें तो जन–कल्याणार्थ बहुत से तथ्य अवश्य प्राप्त होंगे। षडाम्नाय तंत्र ग्रंथ भी कुछ ऐसा ही है।

षडाम्नाय तन्त्र तन्त्र–संग्रह में प्राप्त है। शाक्तों ने भारत समेत एशिया को तीन विभागों में विभक्त कर विष्णुक्रान्ता, रथाक्रान्ता और अश्वक्रान्ता के रूप में जो तीन विभाग किये हैं, उनमें रथाक्रान्ता वर्ग में षडानन तन्त्र का नाम आया है। वैसे षडाम्नाय का अर्थ–षड्=छः, आम्नाय का अर्थ है मुख। अतः यह तन्त्र षडाम्नाय छः मुख वाले कार्तिकेय द्वारा लिखा गया हो, परन्तु यह तथ्यगत रहस्य नहीं है। रथाक्रान्ता वर्ग में बताया गया है कि इस वर्ग में भी 64 तन्त्र हैं, परन्तु उपलब्ध बहुत ही कम हैं। हो सकता है कि कुछ पाण्डुलिपि के रूप में संग्रहालयों की शोभा बढ़ा रहे हों, जहाँ कुछ दीमक की भेंट चढ़ गये हों, अथवा कुछ यवन शासकों की क्रोधाग्नि में भस्म हो गये हों। फिर भी आम्नाय ग्रन्थों का परिचय प्राप्त होता है।

तांत्रिक साहित्य का स्रोतो विभाग और आम्नाय विभाग प्रसिद्ध है, जिसमें पहला विभाग शैव तन्त्रों के लिये है और दूसरा विभाग शाक्त तन्त्रों के लिये मान्य है। कुलार्णव तन्त्र के अनुसार पाँच आम्नायों की उत्पत्ति शिव के मुख से हुई है। मुख से उत्पत्ति होने के कारण इन्हें आम्नाय कहा गया है। वे आम्नाय हैं–1. पूर्वाम्नाय, 2. पश्चिमाम्नाय, 3. दक्षिणाम्नाय, 4. उत्तराम्नाय तथा 5. ऊर्ध्वाम्नाय। यहाँ शंकर जी स्वयं पार्वती से कह रहे हैं कि ये उपर्युक्त पाँचों आम्नाय मेरे मुख से ही निकले हैं। मत पंचवक्त्रेभ्यश्च पञ्चाम्नायाः समुद्गताः।

पूर्वश्च पश्चिमश्चैव दक्षिणश्चोत्तरस्तथा।।[1]

यह विभाग परशराम कल्प सूत्र में कुछ भिन्नता के साथ निर्दिष्ट हैं। नित्यषोडशिकार्णव में चार ही आम्नाय स्वीकृत हैं तथा सभी टीकाकार सहमत भी हैं, किन्तु भास्कर राय का मत है कि चतुः शब्द ऊर्ध्वाम्नाय का ही सूचक है। सौन्दर्यलहरी में छः आम्नाय सूचित हैं। टीकाकार कैवल्याश्रम ने अनुत्तराम्नाय को छठा आम्नाय, तन्त्रालोक में षष्ठ आम्नाय का उल्लेख रहस्यस्रोतम् पाताल यन्त्र अथवा पिचुवक्त्र के नाम से हुआ है। अतः छठा आम्नाय प्रायः कम ही ग्रन्थों में मिलता है। षडाम्नाय तन्त्रों का विस्तार से वर्णन शक्तिसंगमतन्त्र में मिलता है। उपर्युक्त पाँचों आम्नायों के विषय में कुलार्णव तन्त्र में कहा गया है कि पूर्वाम्नाय सृष्टि रूप है, दक्षिणाम्नाय स्थिति रूप है, पश्चिमाम्नाय संहार रूप है और उत्तराम्नाय अनुग्रह रूप है। दूसरे प्रकार से पूर्वाम्नाय मन्त्रयोग है। दक्षिणाम्नाय भक्तियोग, पश्चिमाम्नाय कर्मयोग है और उत्तराम्नाय ज्ञानयोग है।[2] कुलार्णव तन्त्र में ऊर्ध्वाम्नाय को सबसे उत्तम माना गया है। वहाँ कहा गया है कि श्रीगुरुमुख से जो उचित प्रकार से ऊर्ध्वाम्नाय को जानता है, वह शास्त्रोक्त मार्ग से जीवन्मुक्त हो जाता है, इसमें कतई सन्देह नहीं है।

शक्तिसंगम तन्त्र में कुछ षडाम्नाय तन्त्र का परिचय मिलता है, जहां सभी प्रकार के आम्नायों के मार्ग कथन को क्रम से बताया गया है कि पूर्वाम्नाय में दक्षिण और वाम दोनों मार्गों का प्रयोग होता है। दक्षिणाम्नाय में भी दिव्य एवं वाम दोनों मार्गों का प्रयोग होता है। पश्चिमाम्नाय में कौल और दक्षिण मार्ग का प्रयोग होता है। उत्तराम्नाय में कौल और वाम दोनों मार्ग प्रचलित हैं। ऊर्ध्वाम्नाय में केवल दिव्य मार्ग का प्रयोग तथा षडाम्नाय (पातालाम्नाय) में केवल वाममार्ग ही प्रचलित है।[3]

षडाम्नाय में शकुन निरूपण–1. जय, 2. लाभ, 3. मनःखेद, 4. सौख्य, 5. गमन, 6. भृत्य, ये षडाम्नाय के शकुन हैं। अतः साधक छः कोष्ठों का निर्माण करे, फिर उनमें मंत्राभिमन्त्रित पूंगीफल स्थापित करे।[4]

शक्तिसंगम तन्त्र छिन्नमस्तिका खण्ड में सभी आम्नायों के देवताओं के वर्णनक्रम में कहा गया है कि–षडाम्नाय (पातालम्नाय) के देवता हैं–1. दक्षिणी, 2. किन्नरी, 3. सिद्धि, 4. पूतना, 5. कवचा, 6. कूष्माण्डिनी। [5]

षडाम्नाय के देवता : –

षडाम्नाय में चेटकादि प्रयोग में देखे जाते हैं तथा इनमें कादि एवं हादि दोनों मान्य हैं। कादि का अर्थ काली तथा हादि का अर्थ शिव है, अतः इस आम्नाय में शिव और काली दोनों ही मान्य हैं।

भगवान् शंकर ने पार्वती से कहा कि हे परमेश्वरि! महेन्द्रजालविद्या तथा परकाया प्रवेश और खेचरी विद्या से सम्बन्धित पातालाम्नाय (षडाम्नाय) विद्या बतायी जाती है। इसमें 105 तन्त्र और 1400 उपतन्त्र हैं। यहां तक कि इसमें रहस्य से भी अतिरहस्यात्मक आम्नायों को कहा गया है।

पातालाम्नाय (षडाम्नाय) के अन्तर्गत समस्त शाबर, समस्त अघोर जातियां, चीन, बौद्धागमन, जैन एवं समस्त चेटकादि, पितृभू निवासिनी, चण्डकात्यायनी, दो महामण्डल, आठ यक्षिणी, कालकूट, सर्प के अधीश्वर, किन्नरी, चेटिका ये सब षडाम्नाय के देवता हैं।[6]

षडाम्नाय में 66 तन्त्रों से युक्त काली ऊर्ध्वमुखी है। मधुमती विराट् रूपा पाताल में राज्य संचालन करती है।[7] पातालाम्नाय में तीनों लोकों की उत्पत्ति रूप सम्भोग योग का निरूपण किया गया है। इसमें रसायन, वेताल, वह्नि वेताल

और यक्षिणी दिखाई पड़ती है। इसमें सम्भोग योग और पञ्चयोग अर्थात् मद्य, मांस, मीन, मुद्रा और मैथुन वाला आम्नाय कहा गया है। साथ ही भगवान् शंकर द्वारा इसे अत्यन्त गुप्त रखने को कहा गया है तथा 'गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं पुनः शिवे।' यह कहकर इसकी गोपनीयता पर जोर दिया गया है तथा यह भी कहा गया है कि गोपनीय रखने वाला साधक त्रिशक्ति से समायुक्त होता है। इसमें कोई सन्देह नहीं है तथा शिव ने पार्वती से यह भी कहा है कि हे देवि! कलियुग में यही योग विस्तार को प्राप्त करेगा।[8]

षडाम्नाय में मन्त्र–इस तन्त्र में कोट्यर्बुद मन्त्रों की संख्या मानी गयी है। अतः उपर्युक्त वर्णनानुसार षडाम्नाय तन्त्र में मन्त्रों की संख्या की कोई गिनती नहीं है।

शक्तिसंगम तन्त्र के अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है कि यह षडाम्नाय तन्त्र शाक्त सम्प्रदाय का तन्त्र है तथा यह सबसे भिन्न प्रतीत होता है।

षडाम्नाय तन्त्र का स्वरूप–षडाम्नाय तन्त्र का षडाम्नाय के रूप में स्पष्टतः कहीं भी परिचय नहीं प्राप्त होता है, केवल शक्तिसंगम तन्त्र में षडाम्नाय को पातालाम्नाय के नाम से आख्यात किया है, अतः इसी पातालाम्नाय तन्त्र को ही षडाम्नाय मानना होगा तथा उपर्युक्त वर्णन से ऐसा स्पष्ट भी हो रहा है कि यह पातालाम्नाय ही षडाम्नाय तन्त्र है। जैसा कि शक्तिसंगम में कहा गया है कि पातालम्नाय में कादि और हादि दोनों देवता समान माने गये हैं।

> कादि हादिमते साम्यं देशपर्याय एव च।
> इति संक्षेपतः प्रोक्तमाम्नायाख्यं शृणु प्रिये।।[9]

इस तन्त्र की पाण्डुलिपि में भी कहा गया है कि ककारः कालिका साक्षात् महायोनि स्वरूपिणी।

इस तन्त्र में ककार को साक्षात् कालिका माना गया है तथा उसे महायोनि स्वरूपिणी कहा गया है। यही नहीं, इसमें तो यहां तक कहा गया है कि रसातलाम्नायं शृणं यत्नेन शाम्भवि।

> समस्तं शाबरं देवि समस्ताघोर जातयः।।[10]
> उड्डीश–डामर–जाल–शाबरादिरसायना।[11]

यहां दोनों में शाबर शब्द मिल रहा है। इससे सिद्ध होता है कि यह तन्त्र शक्तिसंगम तन्त्र के पातालाम्नाय तन्त्र से कुछ मेल खाता है, परन्तु यही षडाम्नाय तन्त्र है ऐसा भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इस तन्त्र की अपनी कुछ भिन्न विशेषतायें ही हैं, परन्तु इतना निश्चित है कि यह शाक्त तन्त्र है तथा इसमें महामाया प्रकृति स्वरूपा त्रिपुरेश्वरी का वर्णन किया गया है।

षडाम्नाय तन्त्र में कामदेव को ही षडाम्नाय माना गया है तथा उसका नित्य स्मरण करना बताया है। इसमें सत्यता है कि यह कामदेव ही तो संसार की सृष्टि, स्थिति और प्रलय का प्रतीक है। कामदेव के कारण ही तो यह संसार चल रहा है, अतः वह पूज्य और स्मरणीय है, इसीलिये कहा गया है कि कामो मन्मथः कन्दर्पो मकरध्वजसञ्ज्ञकः। मीनकेतुं स्मरेन्नित्यं षडाननं स्वराननम्।। षडाम्ना ब्रह्मा सायुज्याधारः सर्वव्यापितः। पञ्चाननः परमात्मा च योगी–भोगी सदाशिवः।।[12]

कामदेव मन को मथने वाला है, अर्थात् मन को व्यथित कर देने वाला है तथा वही कुत्सित दर्प वाला है, इसीलिये उसे मकरध्वज नाम दिया गया है, क्योंकि मकर (मगर) के समान उसका अभिमान है, दर्प है, इसी कारण उसकी ध्वजा को मकर की ध्वजा बताया गया है, तदनुसार उसका नाम मकरध्वज रखा गया है। वास्तव में कामदेव ऐसा ही है, वह जो चाहता है, वह प्राणधारी से कराने में सफल हो ही जाता है। उन कामदेव को मीनकेतु भी कहा गया है, अर्थात् उनकी ध्वजा पर मत्स्य का चिह्न भी है, अतः उन मीनकेतु–मकरध्वज–षडानन– स्वरानन भगवान् कामदेव का नित्य स्मरण करना चाहिये।

षडाम्नाय तन्त्र द्वारा ब्रह्म के निकट पहुंचना सर्वव्यापित आधार है। पंचानन भगवान् शिव परमात्मा, योगी, भोगी और सदा सबका कल्याण करने वाले हैं।

षडाम्नाय में पंच मकार–कहा जाता है कि शाक्त तन्त्रों में मद्य, मांस, मीन, मुद्रा और मैथुन आवश्यक होते हैं। अतः इनका प्रयोग साधक को करना चाहिये। गुरु गोरखनाथ ने तो इसकी भरपूर निन्दा की है, परन्तु बाद में मत्स्येन्द्रनाथ ने इससे परहेज नहीं किया है। अतः इस तन्त्र में भी इन पंचतत्त्वों के प्रयोग की बात कही गयी है तो कुछ अभद्र नहीं है। इसके कुछ संकेत इसके अन्तिम चरण में मिलते हैं, परन्तु स्पष्ट नहीं है, फिर भी इस शंका का निवारण कर दिया गया है।

यहां पर सुरा शक्ति है, मांस शिव है और मत्स्य सुख के मार्ग का गमन करने वाला है अर्थात् सुख के मार्ग को प्राप्त कराने वाला है। श्वास ग्रास में और मृत्यु का नाश करने में मुद्रा का प्रकाश करने वाली है। यहां वाम साधना के पञ्च मकार में से चार का वर्णन किया गया है। जो हैं–सुरा (मद्य), मांस, मत्स्य और चौथा मकार मुद्रा। अब पांचवां मकार है–मैथुन। शिव के सम्यक् दर्शन के लिये वासुकी सदा व्याकुल रहती है। रकार रमण (मैथुन) करने वाली बाला है तथा वह आकार स्वरूप वाली है। मकार श्री महाकाल है जो ब्रह्मपुर में स्थित है तथा वे ही गुरु हैं। रमणी रमणयोग है तथा वे ही आत्माराम कहे जाते हैं।[13]

षडाम्नाय में ऊँ–ओ3म् 'परमेश्वर' परमब्रह्म के नाम की जितनी विज्ञान सम्मत व्याख्या षडाम्नाय तन्त्र में की गयी है, वैसी किसी दर्शन में नहीं है। इसमें कहा गया है कि–

उस परमब्रह्म परमात्मा का सगुण स्वरूप ओंकार है अर्थात् 'ओ3म्' जो तीन गुण वाला है, वे तीन गुण हैं अ, उ, म्। "स्व, दीर्घ, प्लुत और सृष्टि, स्थिति, प्रलय तथा सत्त्व, रजस् तमस्। यह ओंकार ही वेद का मूल कारण है। यही ओंकार शब्द नाद और बिन्दु के समायोग में भ्रमर मोक्ष प्रदान करने वाला है।

यह ओंकार ही मन की छाया है, यही महामाया है तथा सृष्टि का मूल कारण है। यह ओ3म् का मकार तीन बिन्दुओं वाला है। इसमें अकार साक्षात् है तथा यह अकार सृष्टि का उत्पत्तिकारक है। भाव यह है कि परमात्मा का मुख्य नाम 'ओ3म्' तथा यह ओ3म् अ, ऊ और म् इन तीन अक्षरों से बना है, जो तीनों अक्षर तीन अर्थ रखते हैं। इन तीन अर्थों में उस परमात्मा के तीन कार्य बतलाये गये हैं। इसमें अकार साक्षात् सृष्टिकारक है, अर्थात् वह परमात्मा सृष्टि का करने वाला है।

इस ओ3म् शब्द में दूसरा अक्षर उ है, जो 'उ' स्थितिरूप है, अर्थात् उ का अर्थ है स्थिति रखने वाला, अर्थात् वह परमात्मा इस सृष्टि को स्थित रखता है अर्थात् समस्त प्रपंच को स्थिर रखता है, अर्थात् जो सृष्टि हुई है, उसका पालन करता है तथा यह उकार ही बुद्धि रूप है और जनार्दन अर्थात् भगवान् विष्णु है। तथा इस प्रकार भी कह सकते हैं कि अकार सृष्टिरूप अर्थात् ब्रह्मा है तथा उकार

स्थितिरूप अर्थात् विष्णु है तथा मकार बिन्दु (सकल प्रपंच) का संहार करने वाला है तथा वही अहंकार स्वरूप अर्थात् महेश्वर है। अकार ब्रह्मा का रूप है, उकार विष्णु का रूप धारण करने वाला है और मकार महारुद्र (शिव) है जो भौहों के मध्य में स्थित है। इस प्रकार इस बिन्दु की सम्यक् व्याख्या की गयी है। यह बिन्दु ही नाद, सूक्ष्म और लयात्मक है। इस ओंकार बिन्दु में अकार नयन स्थान है, उकार कृष्णरूप को धारण करने वाला है और मकार शिव रूप है।

षडाम्नाय तंत्र में ब्रह्म–षडाम्नाय तन्त्र के अनुसार समस्त ब्रह्माण्ड ही परम ब्रह्म है।

ये समस्त आकाश में ही क्या ब्रह्माण्ड में फैला हुआ अग्नि मण्डल ही समस्त परम ब्रह्म है। जैसे कि काष्ठ के मध्य में अग्नि निष्कल (कलाओं से रहित) अर्थात् दिखाई न देता हुआ निष्क्रिय रूप में तथा सूक्ष्म तत्त्व रूप में स्थित है। उसी प्रकार इस ब्रह्माण्ड में ब्रह्म निष्कल तथा सूक्ष्म तत्त्व के रूप में स्थित है।

वह ब्रह्म सर्वव्यापक है, पूर्ण है, एक है तथा स्थूल और सूक्ष्म दोनों प्रकार का है तथा चिदात्मक है अर्थात् चैतन्य स्वरूप है। यह आत्मा जिसे जीव कहा गया है, वह सूक्ष्म है तथा ब्रह्म बृहद् है, अर्थात् आत्मा उस बृहद् ब्रह्म का एक सूक्ष्म अंश है तथा दोनों ही चैतन्य रूप हैं। यहां ब्रह्म को स्थूल और सूक्ष्म दोनों इसलिये कहा गया है कि यह जो दृश्यमान स्थूल (ठोस पदार्थों) के रूप में संसार है, वह सब भी ब्रह्म ही है तथा उसमें जो गतिशील तत्त्व है, जो दिखाई नहीं देता, वह भी ब्रह्म का सूक्ष्म रूप है। अतः आत्मा सूक्ष्म है, ब्रह्म बृहद् है तथा परमेश्वरी (प्रकृति) चैतन्यरूप तथा ठोस है।

सत्, चित् और आनन्द स्वरूप ब्रह्म का शरीर सूक्ष्म, प्रकाशक एवं स्थूल है। उनके पद में यन्त्र है, उनका शरीर सूर्य है, जो दिन और रात्रि करने वाला है।[14]

यहां पर ब्रह्म को निराकार और साकार दोनों प्रकार का बताया गया है–

निष्कल (निराकार) ब्रह्म शून्यमात्र है तथा साकार ब्रह्म दो में विलास करने वाला है, अर्थात् वह एक तो ब्रह्माण्ड में विलास करता है। दूसरा शरीरों में विलास कर रहा है। परन्तु सच्चिदानन्द स्वरूप ब्रह्म में द्वित्व नहीं है। यह द्वित्वभाव अनुमान किया जाता है तथा यह एक अनुभव है।

द्वित्वभाव होने पर अर्थात् जब यह आत्मा शरीरस्थ होती है, तब द्वित्व भाव रहता है। तब उस द्वित्व भाव में जब द्वित्व एकात्म होने का चिन्तन करता है, तब रसाधिक्य होता है, अर्थात् परमानन्द प्राप्त होता है। शरीस्थ आत्मा को जब परमात्मा में एक होने का ज्ञान होता है, तभी ऐक्य होता है और वह ऐक्य ही उस आत्मा का प्रयोजन है।[15]

इस तन्त्र के अनुसार एक ही ब्रह्म द्वितीय है और वह निष्कल (कलाओं से रहित) और सकल कलाओं से युक्त है। पुरुष और स्त्री रूप ब्रह्म सकल है। अर्थात् जिसमें कलायें हैं, जो चलने–फिरने, घूमने आदि कलाओं वाले हैं। ऐसे ब्रह्म में स्त्रीलिंग और पुल्लिंग हैं। इनमें सब प्रकार के प्राणी आ जाते हैं। अतः ये दो प्रकार के जरूर हैं, परन्तु दो तरह के रहते हुए एक ही हैं।[16]

महावाक्य–'तत्त्वमसि' यह वेदान्त का महावाक्य है, जिसे इसमें भी स्वीकार किया गया है। तत्त्वमसि अर्थात् 'वह तू है' अर्थात् यह आत्मा ही ब्रह्म है अर्थात् आत्मा का परमात्मा में मिलकर 'तत्त्वमसि' की स्थिति हो जाना ही (महावाक्य) है, अर्थात् तत्त्वमसि यह महावाक्य है। यह महावाक्य ज्ञान (आत्मा) और विज्ञान (परमात्मा) से संयुक्त है अर्थात् आत्मा से परमात्मा को मिलाने वाला है। पितर देवता आदि की क्रियाओं वाला सामवेद का गान शक्ति ज्ञान है।[17]

अहं और ब्रह्म–यहां अहं तत्त्व को भी ब्रह्म माना गया है–यह 'मैं' का भाव अर्थात् 'अहं' सबको अपने समान देखता है।

यह आत्मा जो 'अहं' तत्त्व वाली है, वह हिंसा और वाद से रहित है। अहं तत्त्व ही ब्रह्म है। खण्डज्ञानी तथा आत्माराम है।[18] मन्त्र का महत्त्व–षडानाय तन्त्र में मन्त्र को ही सब योगों की सफलता का कारण बताया गया है। यहां पर कहा गया है कि– सभी योग सहयोगी योग है। मन्त्रयोग ही सफलता वाला योग है। मन्त्र ही परम आराध्य है तथा देवताओं व बीजपूर्विका अर्थात् देवताओं को सिद्ध करने का पूर्व बीज है, पूर्व कारण है। पहला कारण है।

जो मन्त्रहीन है, यज्ञादि क्रिया नहीं करता है, ज्ञानहीन है, विडम्बित अर्थात् व्याकुल है तथा मन्त्र के अर्थ को, मन्त्र की चेतनता को एवं योनिमुद्रा को जो नहीं जानता है, वह व्यक्ति यदि सैकड़ों करोड़ जप करे, तब भी सिद्धि (सफलता) नहीं होती है।[19]

परमानन्द–षडाम्नाय तन्त्र आत्मसुख को ही परमानन्द मानता है। आत्मसुख और अपना रूप अर्थात् आत्मा का रूप ही आत्मसुख है, क्योंकि जब मनुष्य को अपना अर्थात् आत्मा का रूप ज्ञात हो जाता है, तब उसे आत्मसुख प्राप्त होता है तथा सुख ही आनन्द कहा जाता है। आनन्द ब्रह्म का रूप है, क्योंकि आत्मानन्द जिसे ब्रह्मानन्द कहा गया है, वह नित्य होता है, इसलिये उसे नित्यानन्द भी कहा जाता है।

संदर्भ सूची

1. कुलार्णव तन्त्र, 3/7
2. कु. तन्त्र, 3/41–42
3. शक्तिसंगमतन्त्र, छिन्नमस्तक खण्ड, पटल 6/83–84
4. श.सं.तं., छिन्नमस्तिका खण्ड, 6/88–89
5. श.सं., 7/15
6. श.छि.खं., 7/133–134
7. श.छि.खं., 7/164
8. श.स., छिन्न., 8/56–60
9. श.सं.तं., छिन्न., 7/26
10. श. सं. त. छि. ख., 7/131
11. षडाम्नाय तन्त्र 1/15
12. षडाम्नाय तन्त्र, 1/50–51
13. ष. तं., 1/64–66
14. ष. तं., 2/31–33
15. ष. तं., 3/230–231
16. ष. तं., 3/368
17. ष. तं., 1/31
18. ष. तं., 1/35
19. ष. तं., 3/165–166